शब्दार्थसम्बन्धमीमांसा

डॉ. जयमंगल पाण्डेय

शब्द का प्रयोजन है, अर्थप्रत्यायकता; परन्तु सभी शब्दों से सभी अर्थों का बोध नहीं होता, वरन् सामान्यतः नियत शब्दों से नियत अर्थों का बोध होता है। शब्द को व्यवहार का कारण मानने वाले सभी दार्शनिक इस वस्तु स्थिति को स्वीकार करते हैं। प्रायः ब्रह्यार्थवादी सभी दार्शनिक–सम्प्रदाय शब्द और अर्थ के मध्य किसी सम्बन्ध का अनुसन्धान करते हैं और यह स्वीकार करते है कि सभी अर्थ सब पदों से वाच्य नहीं होते; क्योंकि यही सम्बन्ध निश्चित पद और निश्चित अर्थ के मध्य होता है; अतः यह स्वीकार किया जाता है कि जो अर्थ जिस पद से सम्बद्ध होता है, उस अर्थ का बोध उसी पद से होता है, अन्य असम्बद्ध अर्थ का बोध कथमपि नहीं होता। किन्तु शब्द और तद्वाच्च अर्थ के मध्य स्थित सम्बन्ध के स्वरूप के विषय में विचारकों के मध्य बहुत मतभेद है।